भगवान को इन आखों से देखने का अलौकिक सुख

भगवान को चलते हुये देखा...
भगवान को पत्र लिखते हुये देखा...
भगवान को माखन खिलाते हुये देखा...
भगवान को टीचर बनकर पढ़ाते हुये देखा...
भगवान को रूहों का श्रृंगार करते हुये देखा...
भगवान को वरदानों से भरपूर करते हुये देखा...
भगवान को दादियों को गले लगाते हुये देखा...
भगवान को सच्ची-सच्ची गीता सुनाते हुये देखा...
भगवान को इस धरा पर आकर साथ निभाते हुये देखा...
भगवान को बच्चों संग होली खेलते, रंग डालते हुये देखा...
भगवान को पालना करते हुये देखा, माजून खिलाते हुऐ देखा...
भगवान को पतित आत्माओं को पावन, पवित्र बनाते हुये देखा...
भगवान को मनुष्य तन में आते हुये देखा, अवतरित होते हुये देखा...
भगवान को खाते हुये देखा, जो खाता ही नहीं उसको भी खाते हुये देखा...
भगवान को बच्चों को सम्मान देते हुये देखा, अपने से आगे बढ़ाते हुये देखा...
भगवान को कैसे बच्चों को प्यार देता, कैसे थोड़े में राजी हो जाता है, ये देखा...
भगवान को ड्राई फ्रूटस् फेंकते हुये, रमणीक, विनोदी, खेलपाल के स्वरूप में देखा...
भगवान को आत्माओं को दृष्टि देकर शक्ति भरते हुये, चार्ज करते हुये देखा जैसे एक आर्मी चीफ कमाण्डर...
भगवान का मिलना, प्यार करना, पालना करना, शक्ति भरना फिर तुरन्त डिटैच हो जाना, ये दिव्य स्वरूप देखा...
भगवान को सच्चे दोस्त के रूप में देखा, ऐसे नहीं कि भगवान है, बल्कि हमसे मिलजुल कर हमारे संग खेलते हुये देखा...
भगवान को चैतन्य मूर्तियों में अलौकिक वायब्रेशन्स्/रूहानी शक्तियाँ भरते हुये देखा... जैसे मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा करते हैं ठीक वैसे ही...
भगवान को हमें प्रकृति का मालिक बनाते हुये देखा... हमारे वायब्रेशन्स को प्रकृति बहुत जल्दी कैच कर लेती है, जिससे आस-पास का वातावरण रूहानियत का बन जाता है...

ओम शान्ति्